“ सफ़ेद मूसली ”

की व्यावसायिक खेती

“दिव्य औषधि“

परिचय-

सफेद मूसली की खेती सम्पूर्ण भारतवर्ष में (ज्यादा ठंडे क्षेत्रों को छोडकर सफलता पूर्वक की जा सकती है। सफेद मूसली (क्लोरोफाइटम बोरिविलियनम) को सफेद या धोली मूसली के नाम से जाना जाता है, जो लिलिएसी कुल का पौधा है। यह एक ऐसी "दिव्य औषधि" है जिसमें किसी भी कारण से मानव मात्र में आई कमजोरी को दूर करने की क्षमता होती है। सफेद मूसली फसल लाभदायक खेती है।

सफेद मुसली एक महत्वपूर्ण रसायन तथा एक प्रभाव वाजीकारक औषधीय पौधा है। इसका उपयोग खांसी, अस्थमा, बवासीर, चर्मरोगों, पीलिया, पेशाब संबंधी रोगों, ल्यूकोरिया आदि के उपचार हेतु भी किया जाता है। हालांकि जिस प्रमुख उपयोग हेतु इसे सर्वाधिक प्रचारित किया जाता है। वह है नपुंसकता दूर करने तथा यौनशक्ति एवं बलवर्धन। मधुमेह के उपचार में भी यह काफी प्रभावी सिद्ध हुआ है।

औषधीय उपयोग-

1. सफेद मुसली एक प्राकृतिक औषधि है, जो शरीर को ऊर्जा प्रदान करने में मदद करती है।
2. इसमें पाये जाने वाले विटामिन, मिनरल्स और एंटीऑक्सीडेंट्स का सेवन स्वास्थ्य को सुधारने में मदद कर सकता है।
3. यह शक्ति बढ़ाने, यौन समस्याओं को दूर करने और शारीरिक क्षमता को बढ़ाने में सहायक हो सकती है।
4. इसके उपयोग से शरीर की रोग प्रतिरोध क्षमता में वृद्धि हो सकती है, जिससे बीमारियों से लड़ने में मदद मिलती है।
5. सफेद मुसली को आयुर्वेदिक चिकित्सा में "शुक्रवर्धक" भी कहा जाता है, जो यौन स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने में मदद कर सकता है।

जमीन की आवश्यकता-

सफेद मुसली के लिए उपयुक्त मिट्टी का चयन और उसकी देखभाल महत्वपूर्ण होती है, ताकि पौधा अच्छे से विकसित हो सके। निम्नलिखित मिट्टी और अन्य शर्तें सफेद मुसली के लिए उपयुक्त हो सकती हैं-

लोम मिट्टी: यह पौधों के लिए सबसे अच्छी मिट्टी मानी जाती है, क्योंकि इसमें स्थायिता और उपयुक्तता होती है। लोम मिट्टी उच्च नींबू और जल सुरक्षित होनी चाहिए।

मिट्टी का pH: सफेद मुसली के लिए मिट्टी का pH सामान्यत: 6.0 से 7.0 होना चाहिए। यह उच्च या न्यूनतम pH स्तर से बचने में मदद करेगा ।

अच्छी ड्रेनेज: मिट्टी में अच्छी ड्रेनेज होना चाहिए ताकि पानी जमा न रहे और पौधों को रूट रोट से बचा जा सके।

उपयुक्त जलसंचार: मिट्टी में अच्छा जलसंचार होना चाहिए ताकि पौधों को प्रचुर मात्रा में आवश्यक जल मिल सके।

इन तरीकों से, सफेद मुसली को सही मि ट्टी में उगा ने से पौधों को अच्छी वृद्धि मि ल सकती है और उनमें ऊर्जा संचित हो सकती है।

जलवायु की आवश्यकता-

सफेद मुसली को उगाने के लिए विभिन्न जलवायु और मौसम शर्तें हो सकती हैं। यह वन्यजीवी पौधा है जो भारतीय मौसम और जलवायु की विविधता के कारण विभिन्न भू-भागों में उगाया जा सकता है। उंत्तरांचल, हिमालय प्रदेश तथा जम्मू-कश्मीर के ऊपर क्षेत्रों के साथ-साथ यह पौधा मध्य भारत, दक्षिण भारत, पूर्वी भारत, और साथ ही पश्चिम भारत में आसानी से और उगाया जा सकता है।

तापमान (Temperature): सफेद मुसली की खेती के लिए उपयुक्त तापमान 20-30 डिग्री सेल्सियस होता है। यह उच्च तापमान क्षेत्रों में भी अच्छी तरह से उगा सकते है, परंतु इसे ज्यादा ठंडे स्थानों से बचाएं रखना चाहिए।

बारिश (Rainfall): सफेद मुसली के लिए मान्यता प्राप्त की जाने वाली वर्षा 600-1000 मिमी के बीच होनी चाहिए। यह वर्षा के बाद की आदती है, इसलिए समय समय पर सुरक्षित वर्षा भी महत्वपूर्ण है।

प्रकाश (Light): सफेद मुसली उच्च प्रकाश स्तर को पसंद करती है, इसलिए खेत में सीधे सूरज की किरणें प्रचुर मात्रा में होना चाहिए।

सफेद मूसली के खेत की तैयारी -

सफेद मूसली 6 महीनें की फसल है जिसे मानसून में लगाकर फरवरी-मार्च में खोद लिया जाता है। अच्छी खेती के लिए यह आवश्यक है कि खेतों की गर्मी में गहरी जुताई की जाए, अगर सम्भव हो तो हरी खाद के लिए ढ़ैचा, सनइ, ग्वारफली बो दें।सफेद मूसली की खेती में भूमि की अच्छी तैयारी करने की आवश्यकता है, क्योंकि यह जमीन के अंदर होती है जिससे जमीन को अच्छी तरह से भुरभुरी बनाया जाना आवश्यक है। जमीन की 1.5 फुट गहरी जुटाई करें, उसमे जैविक खाद को समान मात्रा में फैलाए उसके बाद मिट्टी और खाद को मिलाए ताकि मिट्टी बारीक/ भुरभुरा बन जाए।

मिट्टी में 2 फुट चौड़े बेड/मेड का निर्माण करे जिसकी ऊंचाई 1 फुट तक हो। सफेद मूसली के खेती में बेड के ऊपर ढकने के लिए प्लास्टिक की मलचींग शीट का उपयोग करने से खरपतवार निकालने के खर्चे में कमी आ सकती है। उसके साथ ही सिंचाई के लिए बूंद- बूंद सिंचाई यानि ड्रिप इरगैशन सिस्टम के इस्तेमाल से काफी मात्रा में पानी की एंव खर्चे की बचत के साथ साथ उत्पादन में भी 15-25% बढ़ोतरी देखी गई है।

खाद एंव उर्वरक-

सफेद मूसली की खेती में जैविक खादों एंव उर्वरकों का इस्तेमाल करना चाहिए-

इसके लिए खेत को अच्छे से तैयार कर लेना चाहिये | सबसे पहले खेत की गहरी जुताई कर देनी चाहिये | जुताई के बाद खेत को कुछ समय के लिए ऐसे ही खुला छोड़ दे | इसके बाद खेत में गोबर की खाद डालकर रोटावेटर से जुतवा दे | इससे खेत की मिट्टी में गोबर की खाद अच्छे से मिल जाएगी | इसके बाद खेत में पानी लगाकर पलेव कर दिया जाता है | पलेव के बाद जब खेत की मिट्टी ऊपर से सूखी दिखाई देने लगे तब रोटावेटर चलाकर खेत की मिट्टी को भुरभुरा बना दे | खेत की मिट्टी के भुरभुरा हो जाने के बाद उसमे पाटा लगाकर खेत को समतल बना दे | गोबर की खाद की जगह आप कम्पोस्ट खाद का भी इस्तेमाल कर सकते है | इसके बाद पौधों के अंकुरण के समय 20 kg आर्गेनिक नाइट्रोजन की मात्रा को प्रति हेक्टेयर के हिसाब से देना होता है|

बीज उपचार एवं रोपण –

250 किलोग्राम बीज या 30000 ट्यूबर्स प्रति एकर की दर से बीज की अवश्यकता पड़ती है। बुवाई के पहले बीज का उपचार जैविक विधि से करते हैं । जैविक विधि से गोमूत्र एवं पानी (1:10) में 10 से 15 मिनट तक या ट्रायकोडर्मा पाउडर 100 ग्राम के मिश्रण मे ट्यूबर्स को डुबोकर रखा जाता है । बुआई के लिये गड्ढे बना दिये जाते हैं। गड्ढे की गहराई उतनी होनी चाहिए जितनी बीजों की लम्बाई हो| बीजों का रोपण इन गड्ढों में कर हल्की मिट्टी डालकर भर दें।

सफेद मुसली की किस्में -

सफेद मुसली की कई किस्में देश में पायी जाती हैं। उत्पादन एवं गुणवत्ता की दृष्टि से **एमडीबी 13, एमडीबी 14, आरसी-5, आरसी-15, सीटीआई -1, सीटीआई -17 और सीटीआई-2** किस्म अच्छी है। इस किस्म का छिलका उतारना आसान होता है, उपर से नीचे तक जड़ो या ट्यूबर्स की मोटाई एक समान होती है। एक साथ कई ट्यूबर्स (2-50) गुच्छे के रूप में पाये जाते हैं।

बिजाई की विधि

खेत की तैयारी करने के उपरांत 3 से 3.5 फीट चौड़े, जमीन से 1 फीट ऊँचे बैड बना लिए जाते है। बरसात प्रारंम्भ होते ही (15 जून से 15 जुलाई के लगभग) इन बैड्स में लकड़ी की सहायता से (जोकि इस कार्यहेतु विशेष रुप से बनाई जा सकती है), कतार से कतार तथा पौधे से पौधा 6 × 6 इंच की दूरी रखते हुए छेद कर लिए जाते हैं। छेद करने के पूर्व यह देखना आवश्यक है कि हाल ही में बारिश हुई हो अथवा उसमें पानी दिया गया हो (जमीन गीली होनी चाहिए)। इस प्रकार एक बैड में कतारें बन जाती है। फिर इस प्रत्येक छेद में हाथ से एक-एक डिस्क युक्त अथवा क्राउन युक्त फिंगर अथवा सम्पूर्ण पौधे का रोपण कर दिया जाता है।

यदि फिंगर बहुत छोटी हो तो 2-3 फिंगर्स को मिलाकर भी रोपण किया जा सकता है परन्तु सभी फिंगर्स में क्राउन का कुछ भाग संलग्न रहना चाहिए। यदि बीज बड़ा हो (5 ग्राम से अधिक) तो 6 × 6 इंच वाली दूरी को बढ़ाया भी जा सकता है। रोपण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि फिंगर जमीन में 1 इंच से ज्यादा गहरी न जाये। फिंगर जमीन में सीधी लगाई जानी चाहिए अर्थात क्राउन वाला भाग ऊपर तथा फिंगर का अंतिम सिरा नीचे। रोपण के उपरान्त इस पर हाथ से ही मिट्टी डाल देनी चाहिए अथवा छेद ऊपर से बंद कर दिया जाना चाहिए। इस प्रक्रिया में प्राय: एक व्यक्ति लकड़ी से आगे-आगे छेद बनाता चलता है तथा दूसरा फिंगर्स का रोपण करता जाता है।

पौधों का उगना तथा बढ़ना बिजाई के कुछ दिनों के उपरांत ही पौधा उगने लगता है तथा इसमें पत्ते आने लगते है। इसीबीच फूल तथा बीज आते हैं तथा अक्टूबर-नवम्बर माह में पत्ते अपनेआप सूखकर गिर जाते हैं और पौधे के कन्द जमीन के नीचे रह जाते है।

सिंचाई एवं निराई-गुड़ाई

रोपाई के बाद ड्रिप द्वार या खुला पाणी छोकड़े सिंचाई करें। बुआई के 7 से 10 दिन के अन्दर यह उगना प्रारम्भ हो जाता हैं। उगने के 75 से 80 दिन तक अच्छी प्रकार बढ़ने के बाद सितम्बर के अंत में पत्ते पीले होकर सुखने लगते हैं तथा 100 दिन के उपरान्त पत्ते गिर जाते हैं। फिर जनवरी फरवरी में जडें उखाड़ी जाती हैं। मूसली बरसात में लगायी जाती है। नियमित वर्षा से सिंचाई की जरूरत नहीं पड़ती है। अनियमित मानसून में 10-12 दिन में एक सिंचाई दें। अक्टूबर के बाद 20-21 दिनों पर हल्की सिंचाई करते रहना चाहिए। मूसली उखाडने के पूर्व तक खेती में नमी बनाए रखें। जल भराव अथवा आवश्यकता से अधिक सिंचाई के कारण जड़ों के गलन का रोग हो सकता है । इसकी रोकथाम के लिए आगे सिंचाई देना बंद करके तथा रूके हुए पानी को बाहर निकाल करके इस रोग पर काबू पाया जा सकता है।

सफेद मूसली में रोग और उपाय :

फंगस के रूप में पौधों पर 'फ्यूजेरिम' का प्रकोप हो सकता हैं। जिसके उपचार हेतु ट्राइकोडर्मा विराइड का उपयोग किया जा सकता है। दीमक से सुरक्षा हेतु नीम की खली का उपयोग सर्वश्रेष्ठ पाया गया है। एक सुरक्षा के उपाय के रूप में कम से कम 15 दिन में एक बार फसल पर गोमूत्र के घोल का छिड़काव अवश्य कर दिया जाना चाहिए। वैसे नियमित अंतरालों पर गौमूत्र अथवा नीम के तेल को पानी में मिश्रित करके उसका छिड़काव् करने से फसल पूर्णतः रोगों अथवा कीटों-कृमियों से मुक्त रहती है।

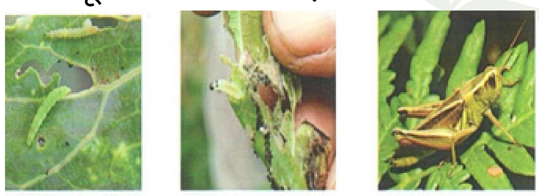

Katapila blong waetbun   Katapila blong alean kabis   Krasopa

मूसली खुदाई (हारवेस्टिंग)

मूसली को जमीन से खोदने का सर्वाधिक उपयुक्त समय नवम्बर के बाद का होता है। जब तक मूसली का छिलका कठोर न हो जाए तथा इसका सफेद रंग बदलकर गहरा भूरा न हो तब तक जमीन से नहीं निकालें। मूसली को उखाडने का समय फरवरी के अंत तक है।

खोदने के उपरांत इसे दो कार्यों हेतु प्रयुक्त किया जाता है:

- बीज हेतु रखना या बेचना
- इसे छीलकर सुखा कर बेचना

बीज के रूप में रखने के लिये खोदने के 1-2 दिन तक कंदो को छाया में रहने दें ताकि अतीरिक्त नमी कम हो जाए फिर कवकरोधी दवा से उपचारित कर रेत के गड्ढों, कोल्ड एयर, कोल्ड चेम्बर में रखे। सुखाकर बेचने के लिये फिंर्गस को अलग-अलग कर चाकू अथवा पीलर की सहायता से छिलका उतार कर धूप में 5-6 दिन रखा जाता है। अच्छी प्रकार सूख जाने पर बैग में पैक कर बाजार भेज देते है।

बीज या प्लान्टिंग मेटेरियल हेतु मूसली का संग्रहण

यदि मूसली का उपयोग प्लांटिगं मेटेरियल के रूप में करना हो तो इसे मार्च माह में ही खोदना चाहिए। इस समयमूसली को जमीन से खोदने के उपरान्त इसका कुछ भाग तो प्रक्रियाकृत (छीलकर सुखाना) कर लिया जाता है। जबकि कुछ भाग अगले सीजन में बीज (प्लांटिग मटेरियल) के रूप में प्रयोग करने हेतु अथवा बेचने हेतु रख लिया जाता है।

मूसली की खेती से उपज की प्राप्ति के लिए यदि 2.5 क्विंटल बीज प्रति एकड़ प्रयुक्त किया जाए तो लगभग 20 से 24 क्विंटल के करीब गीली मूसली प्राप्त होगी। किसान का प्रति एकड़ औसतन 3- 3.5 टन गीली जड़ के उत्पादन की अपेक्षा करनी चाहिए। उनको छीलकर सुखाने से लगभग 80% वजन कम होता है इस तरह एक एकड़ में 600-700 किलोग्राम तक सुखी जड़े प्रति एकड़ प्राप्त हो सकती है।

मूसली की श्रेणीकरण

“अ“ श्रेणी- यह देखने में लंबी. मोटी, कड़क तथा सफेद होती है। दातों से दबाने पर दातों पर यह चिपक जाती है। बाजार में प्रायः इसका भाव 1000-1500 रू. प्रति किलो तक मिल सकता है।

“ब“ श्रेणी- इस श्रेणी की मूसली “स“ श्रेणी की मूसली से कुछ अच्छी तथा “अ“ श्रेणी से हल्की होती है। प्राय: “स“ श्रेणी में से चुनी हुई अथवा “अ“ श्रेणी में से रिजेक्ट की हुई होती है बाजार में इसका भाव 700-800 रू. प्रति किलोग्राम तक (औसतन 500 रू. प्रति किलोग्राम) मिल सकता है।

“स“श्रेणी- प्रायः इस श्रेणी की मूसली साइज में काफी छोटी तथा पतली एवं भूरे-काले रंग की होती हैं। बाजार में इस श्रेणी की मूसली की औसतन दर 200 से 300 रू. प्रति किलोग्राम तक होती है।

भारत सरकार की सब्सिडी

सफेद मूसली के बाजार में लगभग 900 करोड़ रुपए की और बढ़ोतरी होने का अनुमान है। इसे देखते हुए नेशनल मेडिसिनल प्लांट्स बोर्ड (एनएमपीबी) ने किसानों को सफेद मूसली की खेती पर 20-30 फीसदी सब्सिडी देने की घोषणा की है।

प्रति एकर कुल खर्चे

ब्योरे	कार्य	खर्चे
जमीन तैयार करना	जुताई, समतल करना इ.	5,000
खाद	जैविक खाद	20,000
कंद	250 किलो जड़े @ रु 550/- प्रतिकिलो	137,500
बुवाई	कंद जमीन में लगाना	5,000
निंदाई/ गुड़ाई	खरपतवार निकालना	25,000
खुदाई	जमीन से कंद निकालना	5,000
छिलाई और सुखाना	छिलका उतारना और सुखाना	20,000
ट्रांसपोर्टेशन	अन्य देखभाल/ ट्रांसपोर्टेशन इ.	20,000
संपूर्ण खर्च (६ महीने)		**Rs.237,500/-**

प्रति एकर कुल आय

उत्पादन का ब्योरा	वजन (किलोग्राम)	बाय-बॅक कीमत प्रति किलोग्राम	कुल कीमत
सुखी जड़ें (प्रति एकड़)	300 किलोग्राम	रु.1500/-	रु.450,000/-
बीज या प्लान्टिंग मेटेरियल (गीला वजन)	200 किलोग्राम	रु.200/-	रु. 40,000/-
कुल आय			रु. 490,000/-
कुल खर्चे (प्रति ऐकर)			रु. 237,500/-
शुद्ध आय/ नफ़ा (६ महीने)			**रु. 252,500/-**

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

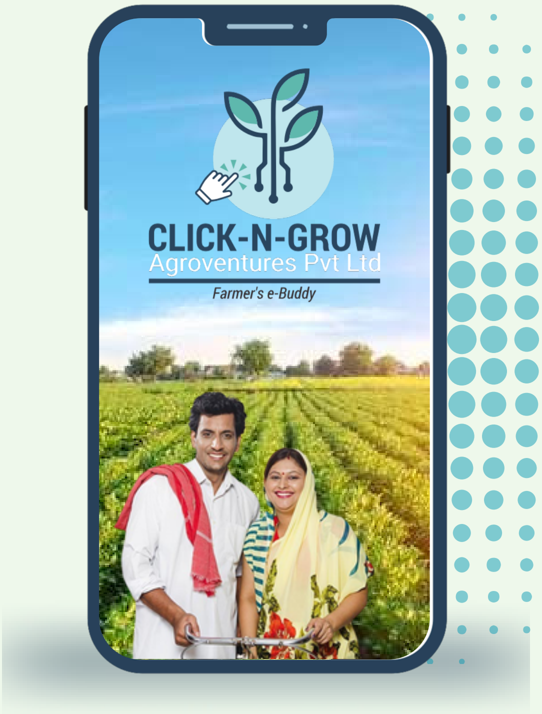

CLICK-N-GROW AGROVENTURES PVT. LTD.

CLICK-N-GROW
Agroventures Pvt Ltd
Farmer's e-Buddy

eKisanZone Farmer's e-Buddy
MITCAD
Contract Farming
KisanSAT AGRO ADVISORY SERVICES
Agri Export Grow Farmer, Grow india

INTERLINKED FARM SOLUTIONS AT ONE PLACE

CONTACT DETAILS

Corporate Office Maharashtra
C/17-18, Dakshata Nagar Complex, Opp New SP Office, Sindhi Camp, Akola, Maharashtra- 444001

Ms. Karishma Srivastava
+91-7028301210

Mr. Bhushan Deshmukh
+91-9096338660

Mr. Amol Khandare
+91-7775008660,

info@ekisanzone.com

info.clickngrow@gmail.com

ekisanzone1@gmail.com

www.ekisanzone.com

www.kisansat.com